राज कॉमिक्स

संख्या 513

प्रचंडा

प्रचंडा सीरीज

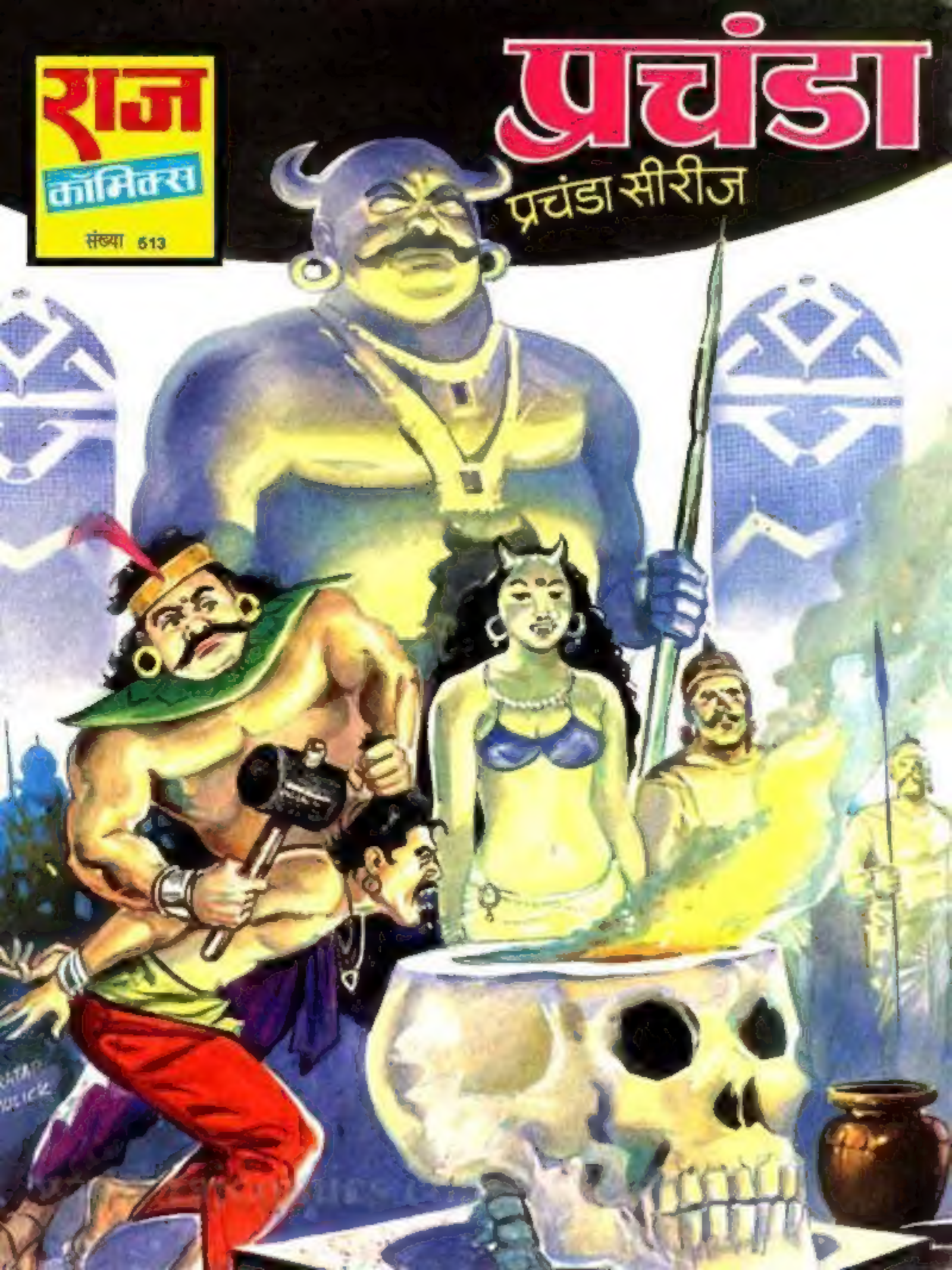

चटोरी

सम्पादक ✦ मनीष गुप्ता
कथानक ✦ दीनदयाल शर्मा
कलालेईंडाल ✦ प्रताप मुखीक
चित्र ✦ मनोविंद्र कौशलाल, प्रवीण
मुलेख ✦ विमान पालखणकर

राक्षस नगरी अंटागुड़बुड़ —

और आज निकले हैं अंटागुड़बुड़ के राक्षसराज अंजर-पंजर शिकार को!

जल्दी चलो रे, आज हमारी प्रिय महारानी चटोरी अजान ने हमसे मानव मांस के पकौड़े खाने की फरमाइश की है!

उधर एक साल में एक बार अपनी गुफा से निकलते थे महर्षि शापदेऊ —

साल में जब तक एक बार किसी को श्रॉप न दे दूं, मुझे पता ही नहीं चलता कि मैंने अपनी साधना में किसकी उन्नति करी है!

इसीलिए जिस दिन श्रॉपदेऊ निकलते थे उस दिन कोई उस गुफा के आसपास नजर नहीं आता।

इधर-उधर किसी को खोजने लगी श्रॉपदेऊ की निगाहें —

आज किसको श्रॉप दूं, कोई नजर ही नहीं आ रहा •••!

आखिर उनकी मुराद पूरी हो ही गई।

वाह ••• आ गया नजर •••!

© RAJA POCKET BOOKS

अंजर-पंजर की दृष्टि भी पड़ चुकी थी उस पर!

उधर चलो! एक साधु नजर आ रहा है... आज मैं अपनी पत्नी चटोरी अम्बाल को इसी के पकौड़े बनाकर खिलाऊंगा!

जब आमना-सामना हुआ...!

हूं... कौन है ये...?

जिसके पकौड़े बनाने हैं क्या से नजर उसका नाम तो पूछ लूं ताकि पत्नी देवी को बता सकूं!

यही मैं तेरे से पूछ रहा हूं!

जिसे शॉप देना है उसका अता-पता तो मालूम कर ही लेना चाहिए!

छाती चौड़ी फुलाकर अपना परिचय दिया अंजर-पंजर ने—

मैं हूं तेजस्वी, प्रतापी, तीनों में तीन... अनेक दिव्यास्त्रों का मालिक राक्षसराज अंजर-पंजर!

अब बता तू किस खेत की मूली है?

मुझे शॉपदेऊ कहते हैं बच्चे!

सुनकर सारे के सारे यूं चौंके मानो कदमों तले जमीन हट गई हो, सिवाय अंजर-पंजर के।

बाप रे शॉपदेऊ!

अंजर-पंजर ने बड़ी खतरनाक हस्ती से पंगा ले लिया।

साल में एक बार शुक्ल में शिकस्ता है यह शॉपदेऊ।

आदेश बलबलाया अंजर-पंजर ने—

कीलिऊ! गिरफ्तार कर के ले चलो इसे!

मगर अब कोई आगे न आया तो चकरा उठा वह—
आई... सारे के सारे कहां गायब हो गए एकाएक!
हा हा हा... अंजर-पंजर...
चलो अच्छा हुआ मुझे गिरफ्तार करने का हुक्म देकर इसने कोई अपराध किया तो नहीं। अब इसे शॉप देने के बाद मेरी आत्मा मुझे धिक्कारेगी नहीं!

सारे सैनिक झाड़ियों के पीछे सिर छिपाए दुबके थे!
बेटा, नीचे रख सिर...
मगर अपने महाराज अंजर-पंजर
वह तो शाप काम से समझा ले!
बेचारे महाराज! अगर उन्हें महर्षि शॉपदेव के बारे में पता होता तो कभी पंगा न लेते उनसे!

इधर अंजर-पंजर के सिर पर क्रोध सवार हो गया—
हम तेरे को अभी गदास्त्र से चूर-चूर कर देते हैं!
बदमाश!

गदास्त्र का भयंकर वार करने के लिए उछाल भरी अंजर-पंजर ने!
सावधान हो जा! हम तेरा सिर तरबूज की भांति फोड़ने आ रहे हैं!
पहले हम गदास्त्र को ही देख लूं!

तेरे गदास्त्र को शॉप देता हूं! वह चूर-चूर हो जाए!

अगले ही पल गदास्त्र गुब्बारे की भांति फट गया!
ठ्ठा क

हतप्रभ रह गया अंजर-पंजर पर कुछ नहीं—

गदास्त्र गया तो क्या हुआ अब तलवारास्त्र तेरी मुंडी उड़ा देगा !

इसे भी झोंक देता हूं कि यह टुकड़े-टुकड़े हो जाए...

उधर शब्द रुके और इधर अंजर-पंजर के हाथ में रह गई केवल मूठ तलवार की—

?!

फिर धनुषास्त्र—

भस्मास्त्र—

धड़ाक्

धड़ाक्

धड़ाक्

आखिरकार...!

अब मेरे सिर की टक्कर तेरे पांव धरती से उखाड़ देगी—

कंजरास्त्र—उसने कई दिव्यास्त्रों का...

...प्रयोग करना चाहा पर सबको झोंक दिया गया।

शॉपदेऊ भी क्रमशः खेल खेल चुके थे अंततः

अंजर-पंजर जा मेरा शॉप है कि तेरे सारे अंजर-पंजर ढीले हो जाए!

राक्षसराज अंजर-पंजर के सचमुच सारे अंजर-पंजर ढीले हो गए!

हाथियों से मल्लयुद्ध करने वाला इतना शक्तिहीन हो गया कि स्वयं की टांगों पर खड़ा होना दूभर हो गया।

महर्षि शॉपदेऊ के रोकने पर मुस्कराते गाए उठी। मानो कोई बहुत बड़ा किला फतह कर लिया हो उन्होंने –

बस – दे दिया शॉप... अब मुझे आत्मिक शांति मिल गई। चलूं अपनी गुफा में एक साल के लिए!

हतोर अंजर-पंजर –

महाराज

अरे! कोई उठा ले चलो मुझे महल तक... मेरी सारी शक्ति छिन गई!

सैनिक जो राक्षसराज अंजर-पंजर को कंधों पर बिठाके लाए थे लिटा के ले जा रहे थे।

महाराज! आपको उससे पंगा नहीं लेना चाहिए था!

अरे! मने के मालूम था तो इतनी खतरनाक हस्ती है!

अब तो पता चल गया न!

● मने = मुझे

फिर अंटागुडगुड में—
महाराज आ गए महाराज ... मेरे लिए मांस के पकौड़े लाए
हाय! (बहुह!) चटोरी जबान! अब तो तुम हमारे पकौड़े बना लो ...!
पूरी बात सुन!
क्या ... तुम्हें क्या जरूरत थी उस शॉप-केऊ के सामने आने की?
छोड़ो जी पकौड़ों को ... मैं अभी राजवैद्य को बुलवाती हूं तुम्हारे इलाज के लिए!
हमें क्या ... ा मालूम था वे ... तो चीज हैं ... हम पकौड़े के लिए ...
अगले ही दिन राजवैद्य बीमारी से घोषणा की—
महाराज अंजर-पंजर की सारी शक्ति खत्म हो गई है ... उनकी शक्ति लाने का एक ही उपाय है। एक चीज लानी होगी।
क्या उपाय है? आप बोलिए। मैं अपने भाई से कहकर सब चीजें मंगवा दूंगी!

इन्हें मारव अर्क पिलाना होगा!

मारव अर्क पीकर इनमें धीरे-धीरे शक्ति आ जायगी!

मैं अपने भाई अंटाबंटा को खबर भेजकर बुलवा लूंगी। वही इस संकट की घड़ी में काम आयगा!

उसी समय अंटागुडगुड के पास एक राज्य घोड़ापछाड़ को बांटा जा रहा था दो भागों में—

"पुत्रो! तुम्हारी जिद के कारण मैं अपने राज्य को दो भागों में बांटकर एक भाग युवराज ढीठ व दूसरा छिलड़ के हाथों सौंप रहा हूं, पर एक शर्त है मेरी!

ढीठ व छिलड़ दोनों चौंके—

कैसी शर्त पिताश्री?

शर्त है ढीठ कुमार, छिलड़ कुमार के राज्य के सिंहासन पर बैठेगा और छिलड़, ढीठ के सिंहासन पर। हर रोज शाम को दोनों अपने-अपने राज्य में वापिस चले आया करेंगे।

पिता की शर्त से पुत्रों की बुद्धि चकरा गई—

बड़ी अजीब शर्त है!

इस शर्त का क्या मतलब?

मतलब ये होगा कि एक तो तुम लोग आपसी नहीं रहोगे, दूसरे तुम एक दूसरे के राज्य में आकर एक दूसरे की उन्नति देख स्वयं भी उन्नति करने की कोशिश करोगे...!

क्योंकि कहावत है न 'खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है'। इसी तरह ढीठ, दिलेरगढ़ एक-दूसरे को देख उन्नति करेंगे और मेरा नाम रोशन करेंगे!

मगर कानून और व्यवस्था!

वह भी तुम स्वयं ही निर्धारित करोगे जैसे ढीठ अब तक दिलेरगढ़ के राज्य में रहेगा, उसका कानून चलेगा... इस तरह तुम लोग गलत काम नहीं करोगे, क्यों कि एक भाई को दूसरे के प्रति जवाबदेह होना पड़ेगा।

साथ ही मेरा एक श्राप है इस फकीर का... अगर तुम दोनों ने एक-दूसरे के राज्य का खजाना पार कर अपने राज्य में ले जाने की कोशिश की तो वह खजाना हवा में उड़कर लुप्त हो जाएगा!

पर एक वरदान भी है जिस दिन तुम दोनों भाई एक हो जाओगे और मिल कर इस विभाजन रेखा को मिटा दोगे सब ठीक हो जाएगा पहले जैसा!

सारी बात बता सवालिया नजरें फेंकी दोनों पर दक्कासिंह ने—

बोलो मंजूर है?

राजा बनने की जिद सवार थी दोनों पर...!

मंजूर है!

मुझे भी मंजूर है जी...

तो ठीक है! अब मैं रहा हिमालय पर्वत पर ईश्वर के ध्यान में मग्न होने। साल भर बाद आऊंगा तुम्हारी तरक्की देखने।

दीठ व हिल्सड़ पूरे न समा रहे थे राजा बनने पर —
घोड़ा पछाड़ राज्य का जो हिस्सा दीठ के पास था उसका नाम रखा उसने घोड़ालगार —
हा हा हा ! हम राजा बन ही गए ••• अब हम पूरी ढीठाई के साथ अपनी मनमानी करेंगे !
और हिल्सड़ ने रखा अपने हिस्से का नाम पछाड़ पुरी —
हिल्सड़ के राज्य में सबको ढील होगी आराम से कार्य करने की !
उधर ••• अंटाबुड़बुड़ में खबर पा आ चुका था चटोरी अबाल का भाई अंटाबंटा —
बोलो बहन ••• किसकर अंटाधार करने को बुलाया तूने अंटाबंटा को ?
भैया अंटाबंटा ! बहुत बड़ी मुसीबत आ गई •••
संक्षेप में सारी बात बताती चली गई महारानी चटोरी अबाल !
सुनकर एक बार तो क्रोध आया अंटाबंटा को —
तू अपनी चटोरी अबाल पर काबू नहीं रख सकती थी ! अब फंसवा दिया न मेरे जीजाश्री को !
आंसू बहा उठी चटोरी —
भैया •••
आंसू बहाना ही तो आखिरी हथियार है हमारा !
वह हथियार काम कर गया —
ठीक है, ठीक है ••• मैं जीजाश्री को रोज मालपुआ खिला दिया करूंगा। जीजाश्री उन्हें छुड़वा लिया करेंगे !

चल पड़ा अंतावेटा मालव लाने —

आंख मींचकर चलता हूं ...जो भी राज्य सामने पड़ेगा उसी से लाऊंगा मालव !

जिस राज्य से एकत्रकर अंतावेटा की आंख खुली वह बदकिस्मती से था घोड़ानगर —

बस यहीं से कुछ मालव ले जाता हूं !

बाप रे राक्षस!

महाराज को ख़त्म करो!

तभी अंतावला ने हाथ बढ़ा पकड़ लिए कई सैनिक और इतना खुश हुआ मानो किसी जंग से सकुशल उबारकर लौटे हो उसके –

ही ही ही ! मिल गए आज तुम्हारा अर्क पीयेंगे मेरे जीजाश्री !

अपने पिता की शर्त के अनुसार उस वक्त घोड़ामगर के सिंहासन पर विराजमान था विस्फुड़ !

तो हम क्या करें ?

महाराज ! एक राक्षस हमारे कई सैनिकों को पकड़ ले गया !

आप चलकर उसे मौत के घाट उतार दें !

हम यहां के राजा थोड़े ही हैं ! हम तो पर्वतपुरी के राजा हैं ! यहां तो हम सिर्फ अपने पिता की शर्त के अनुसार सुबह से शाम तक का वक्त गुजार रहे हैं !

मगर आप कुछ तो करिए !

हां-हां, कानून और व्यवस्था इस वक्त आपके हाथ में है !

तो फिर ठीक है ! हम चलते हैं ... युद्ध करने ... !

मैं ढीठ को अपने अहसास तले दबा लूंगा !

महाराज ढीठ कुमार की जय !

तुम ढीठ कुमार की जय क्यों बोल रहे हो ! युद्ध तो मैं करने जा रहा हूं !

पर हमारे राजा तो ढीठ कुमार ही हैं न !

आप तो सिर्फ कामचलाऊ राजा हो ! दिन में आते हो शाम को वहां जाते हो !

देखते ही देखते सेना की एक बड़ी टुकड़ी ले आ डटा अलाबंटा के सामने राजकुमार दिलचंद—

हा हा हा ! दिलचंद ! तू राजा कब से बन गया ? खैर बन गया तो कोई बात नहीं, मगर मुझे धमकी कब से देने लगा !

वाह रे ! चूहा तो अंटाबंटा है ... इसकी अकल तो मुझे में घेरकर ही मैं छिन्नर गीदा कर देता हूं ... ! खैर ... सैनिकों के सामने अपनी बेइज्जती बर्दाश्त होने से बचाना होगा !

ओ अंटाबंटा ! उन सैनिकों को छोड़ दे ... वरना मेरे सैनिक तेरे लहू से इस धरती को लाल कर देंगे !

दिलचंद ने अपने स्वर को और कर्कश बनाने की कोशिश की—

बातों में वक्त खराब न कर, और ... सैनिकों को छोड़ दे !

नहीं छोड़ूंगा तो तू क्या मेरी मूंछ का बाल उखाड़ लेगा ?

* उखाड़ = उखाड़

चलते ही पारा गर्म हो गया क्षितिसेन का –

मौलिको! इसे खत्म कर दो •••

मैंने तो अपना कर्तव्य निभा दिया। अब मौलिक और इसके बीच होगी लड़ाई!

मगर तब उसकी हैरानी की सीमा न रही जब एक भी मौलिक आगे न आया –

क्या बात है••• आगे बढ़कर इसकी बोटी - बोटी कर डालो!

महाराज हम उस पर वार कैसे कर सकते हैं! वह हमारे राज्य की सीमा में नहीं खड़ा!

क्षितिसेन एरअैसे घड़ों पानी फिर गया –

आय••• वह तो घोड़ामगर की सीमा रेखा के दूसरी तरफ है!

दुष्ट राक्षस हिम्मत है तो रेखा पार करके इधर आ!

हा हा हा! आता तो जरूर पर मेरे जीजाश्री बीमार हैं! उन्हें मानव अर्क पिलाने का वक्त हो गया है! फिर मिलेंगे!

अट्टहास लगाता हुआ मुड़ चला अलाबंटा।

उस समय जब डीलक्समार अपने राज्य में आया—

क्या?

हां, वह राक्षस अलीबटा हमारे दासियों साथी पकड़ ले गया!

हमारे बहुत कहने के बाद ही महाराज डिल्लन चले थे।

चिन्ता मत करो कल मैं डिल्लन को सबक सिखाऊंगा!

उधर अंटागुडगुड के राक्षसराज अजर-पंजर की कराह से कांप उठा महल—

अंदर अजर-पंजर शराब पी रहा था—

मैं नहीं पी सकता हुजूर!

क्या हुआ तो नहीं?

ये दो... एक शराब की अतिरिक्त बूंद भी मजबूर कर देती है मेरा दिमाग घूम गया!

हाय-हाय कर उठा अंजर-पंजर—

बहन—शक्तिहीन तो पहले ही था, अब दांत भी गए... हे विंध्याचलनाथ, अब मेरा क्या होगा!

भैया! कोई तो उपाय करो! देखो तुम्हारे जीजाश्री को मानव खूसते हुए कितनी तकलीफ हो रही है!

बहन... इसका उपाय तो अब महादैत्य दांतले ही बता सकते हैं... और उन्हे प्रसन्न करने के लिए यह करना होगा!

तो फिर कीजिए न यह!

तभी बातों में अड़ंगी मारी अंजर-पंजर ने—

तुम क्या सोचते हो महाराक्षस दांतले, ऐसे ही प्रसन्न हो जाएंगे! उन्हे प्रसन्न करने के लिए एक सौ एक मनुष्यों के दांतो की बलि देनी होगी!

इधर यह शुरू हुआ—

यह काम तुम मुझ पर छोड़ दो... तुम तो हम यह शुरू कर दो!

दांतले को अपने दूटे दांत चढ़ाकर ही मैं यह की शुरुआत करता हूं!

उधर चौड़ानगर व पहाड़पुरी की सीमा पर फिर आ डटा अटाघंटा—

हा हा हा ... तो आज दोनों राज्यों की सेनाएं खड़ी हैं मुझे रोकने के लिए!

अटाघंटा! तुम्हें कितने आदमी चाहिए ले जाओ इधर से। मगर उधर की सेना को कुछ मत कहना।

नहीं अटाघंटा, रहने दो... हमारे इधर के सैनिक कितने हट्टे-कट्टे हैं। इनका ताजा-ताजा मांस खाकर अपनी सेहत बनाओ।

राक्षस अटाघंटा की खोपड़ी खिसका गई।

यह क्या रागनी अलाप रहे हैं। राजा लोग तो अपनी-अपनी सेना व प्रजा की रक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगा देते हैं!

...पर ये तो दूसरे राज्य की रक्षा के लिए अपनी-अपनी सेना खड़ा कर रहे हैं!

बेचारा क्या जानता था कि कीच व सिरमड़ अपने-अपने राज्य में नहीं, बल्कि एक-दूसरे के राज्य में रह रहे हैं।

अंटाबंटा ने घोड़ालगर की तरफ हाथ बढ़ाया —

बचाओ

भागो

कि पहाड़पुरी से चीख पड़ा ढीठ —

अंटा! अगर तूने उधर का एक भी आदमी पकड़ा तो अजाम बुरा होगा!

क्रोध में पलटा अंटाबंटा उसकी तरफ —

तो ठीक है तेरी तरफ के आदमी पकड़ता हूं। मुझे तो मतलब आदमी पकड़-कर ले जाने से है!

नहीं अंटा... उधर के आदमियों पर रहम खा... मेरे यहां ले जा... ले जा रे मेरे ताजे - ताजे मानव!

आखिर कैसा अंटाबंटा ने किया —

मुझे एक औ एक आदमी चाहिए। पचास इधर से, पचास उधर से!

बचाओ

बचाओ

दोनों तरफ के सैनिकों को घास के तिनकों की भांति पकड़ लिया उसने —

उसकी हुंकार देख दोनों पक्षों के बलवंत अपने - अपने मैदान में पहुंच गए —

मुझे अपनी सेना के साथ मिलकर इसका वध करना चाहिए !

हा हा हा... सौ तो पकड़ लिए हैं जी मैंने ... अब एक आदमी पकड़ना है। यह मैं तुम पर छोड़ता हूं !

अब बीठ व ढिस्लड़ अपने - अपने सैनिकों के साथ खड़े थे !

खबरदार जो एक कदम भी आगे बढ़ाया !

और इस तरफ से मैं तुम्हें एक सैनिक तो क्या चूहे का बच्चा तक नहीं मैं आने दूंगा !

फिर घूम गई अंताबटा की खोपड़ी —

अभी तो तुम एक दूसरे की सेना बचाने के लिए अपनी पूरी सेना मेरे सामने परोस रहे थे और अब एक सैनिक के लिए जान पर खेल जाने की बात कर रहे हो !

तब हम अपने पिता की शर्तों में बंधे लक्ष्मण के अंधे पुतले थे।

दे दो मुझे युवक न दिलाओ, वरना मैं खतरनाक हो उठूंगा !

सिर्फ एक आदमी के लिए पंगा मत लो मुझसे !

फिर उसने एक सैनिक को तरफ बढ़ाया हाथ...

आजा प्यारे पास हमारे काहे घबराए !

बचाओ

धड़ाम

चकरघिन्नी

और आ ही गया क्रोध अंटाबंटा को... सचमुच वह उनकी पूरी सेना के लिए खतरा बन गया।

मुझ पर वार किया तुमने... अब मैं खतरनाक बनके रहूंगा! हा हा हा... अब देखता हूं कैसे रोकोगे तुम अंटाबंटा को ?

साथियो! आक्रमण करो!

तीरों का एक बड़ा दल अटावटा की तरफ लपका—
छलनी कर दो उसे अपने तीरों से!
लगर अटावटा की एक ही फूंक ने उन्हें हवा में उड़ा दिया—
उसका हथियार कहर बरपाने लगा—
बड़े बड़े वृक्ष, शाखी, पौधे—उसने सारी वन्य कुशलता तबाह कर दी—

अपनी सेना की तबाही देख क्रोध और विस्मय से गदा सम्भाल बढ़े –

प्रचंडा

धड़ाक्

एक ही झपट्टे में दोनों को पकड़ लिया अंटाबंटा ने!

आह!

भैया!

हा हा हा... अंटाबंटा को मारने के लिए इन खिलौनों की नहीं... बल्कि किसी बहुत बड़े हथियार की जरूरत होती है!

धड़ाक्

धड़ाक्

हथेली पर रख एक जोरदार फूंक से उड़ा दिया अंटाबंटा ने उन दोनों को --

जाने क्यों तुम्हारी भोली-भाली सूरत देख तरस आ रहा है मुझे इसलिए छोड़ रहा हूं !

वे मीलों दूर हवा में लहराती चले गए --

फिर सैनिकों के झुण्ड में से दो मुट्ठी सैनिक उठा लिए उसने !

अब कौन सी मुट्ठी में पचास हैं, और कौन सी मुट्ठी में इक्यावन हमको कुछ नहीं पता ... !

उधर ... कई मील दूर आकर गिरे कुमार वीर व बिल्लेसुर --

कौन है रे बाहर ?

आह

हाय

जो शख्स बाहर निकला उसे देख दोनों के चेहरे भय से भर उठे --

कौन है?

बाप रे ... महर्षि शोपदेऊ !

लगता है हमारे शोर से इनकी समाधी भंग हो गई ... अब हम गए काम से !

शीश झुका वे दोनों दुखायुक्त --

महर्षि क्षमा ... हम निरपराध हैं !

सारा किया धरा उस अजर-पंजर के साले अटाबटा का है !

एक बार तो चौंके शॉपदेऊ— फिर जैसे कुछ ध्यान आया—
अरे हां, अजर-पजर — वही राक्षस न जो इस मार्ग मेरे द्वारा शॉप पाकर धन्य हुआ है — भई बड़ा भाग्यशाली राक्षस है — जो मेरे जैसे महातपस्वी से शॉप मिला है उसे।
अंजर-पंजर अंटाघंटा...
लेकिन वह हमारे दुर्भाग्य का कारण बन गया!
कैसे?
बताते हैं—
जब तक ये दोनों महर्षि से अपनी दुख गाथा कहें हम चलते हैं...!
...राक्षसनगरी अंटागुड़बुड — जहां चल रहा है महादैत्य दांतले को प्रसन्न करने हेतु दन्त यज्ञ —
छि: इतने गन्दे दांतों वालों के दांत चढ़ाओगे दांतले पर... वे अप्रसन्न हो जायेंगे...!
बंधकों को अब असलियत पता चली तो—
क्या हमारे दांत निकालोगे?
मुझे तो छोड़ दो भैया— मेरे तो वैसे सारे दांत नकली हैं!
मेरे तो दांत हैं ही नहीं। मैं भला क्या काम का?
मेरे सड़े दांत अपने महादैत्य पर चढ़ाओगे तो तुम्हें वरदान नहीं शॉप देंगे!

उधर "लंगूर खाप" रगड़ा जा रहा था —

अल्दी - अल्दी चमका लो रे अपने - अपने दांत !

उधर लंगूर खाप मंजन दे दिया गया —

यह मंजन तुम्हारे दांतों की सड़न दूर करके मोती की तरह चमका देगा —!

यह लो मेरे तो दांत अपने आप चमका लो और मैं तो चला !

उधर ••• महर्षि शोपदेऊ की आंखें क्रोधित हो उठीं —

उस अजर-पंजर के साले की यह मजाल••• होने दो जरा यह साल पूरा, अगले साल उसी को दूंगा श्रॉप !

मगर अगले साल तक तो वह हम दोनों के राज्य को सुख-साज कब्रिस्तान में बदल देगा !

पर — मैं कुछ और कर भी तो नहीं सकता —!

हम उससे लड़ नहीं सकते। आप कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे हम अपने - अपने राज्यों को बचा सकें!

तब तो स्वयं महादेव ही बतायेंगे तुम्हें उपाय। मैं इतना कर सकता हूं कि तुम महादेव तक पहुंच सको।

आपकी बड़ी कृपा होगी!

अगले पल महर्षि ने कोई मंत्र बुदबुदाया, और हाजिर हो गया एक विचित्र यान —
यह यान तुम्हें महादेव तक ले जायेगा!
दूसरे ही पल दोनो उस यान मे बैठे उड़े जा रहे थे —
महर्षि शापदेऊ तो बड़े दयालु हैं...!
लोग बेकार में डरते है उनसे!
उधर बंदी सैनिकों के कदम से आकाश थर्रा उठा —
हाय! मेरे सुंदर सुंदर दांत!
ये एक सौ एक अखाड़ा!
दांतों का ढेर लेकर अंजर-पंजर "दांतले" दैत्य की प्रतिमा के सामने पहुंचा —
हे दैत्य जी... आपको प्रसन्न करने की खातिर हम एक सौ एक मनुष्य के दांतों की बलि आप पर चढ़ाते हैं!
और तभी खोपड़ीकुंड में आग का भभका सा उठा —
धक धक

महादैत्य दांतले को देखते ही खुशी की लहर दौड़ गई —

वाह! भक्त अंजर-पंजर हम अति प्रसन्न है तुमसे। मांगो, क्या मांगते हो।

अंजर-पंजर अपने अंजर-पंजर ढीले होने की दुख भरी गाथा सुनाता चला गया —

फिर याचना भरे स्वर में कहा —

अब दैत्यराज ... मेरे जीवन की डोर मालव अर्क पर टिकी है। पर अर्क मेरे नसीब में नहीं लिखा!

हम ... समझ गए तुम्हें किस चीज की जरूरत है!

तत्काल दैत्यराज दांतले के हाथ में प्रकट हुआ एक यंत्र —

इस यंत्र को रसकावु कहते हैं। बोलो, इसी की जरूरत है न तुम्हें?

रसकावु को देखते ही मालव अर्क पीने की इच्छा और मारने लगी अंजर-पंजर की —

दांतला के अंतर्धान होते ही—

हा हा हा! मिल गया रसकारू! अब मैं सारे मानवों का इसमें जूस निकाल-निकालकर पीऊंगा और शीघ्र ही शक्तिवान बन जाऊंगा!

उधर कैलाश पर्वत पर उतर रहा था यान ढींग, बिल्लड़ का—

यहां तो पहले ही से कतार लगी है!

महादेवजी सबके दुखों का निवारण करने वाले हैं!

देवों के देव महादेव के सामने मौजूद थी पांच शक्तियां!

ये पांच महान हस्तियां थीं—

पवन देवता...

जल देवता...

आकाश... इतने भयंकर राक्षस पैदा हो गए हैं पृथ्वी पर कि... उनके कदमों की आहट से मैं थर्रा उठता हूं!

पृथ्वी...

हे देव... पृथ्वी पर पाप बहुत बढ़ गया है... मुझसे और पाप सहन नहीं होता!

असुरों ने धरती पर इतना उत्पात मचा रखा है... मैं भी अब शुद्ध नहीं रहा!

असुर... मांसभक्षण करने के बाद मानव अस्थि-यां समुद्र में फेंक देते हैं... जिससे मैं अशुद्ध होता जा रहा हूं!

और अग्नि-देव—

मेरा तो बहुत ही दुरुपयोग करते हैं राक्षसगण... निर्दोष लोगों के घर जला देते हैं... और मैं मजबूरन आंसू बहाकर रह जाता हूं!

हम पांचों की यही प्रार्थना है कि या तो आप हमें अपने चरणों में बुला लें या फिर हमारा उद्धार करें!

नहीं-नहीं पृथ्वी के मानव का निर्माण तुम पांचों तत्वों के मेल से हुआ है। अगर एक भी तत्व पृथ्वी से आलोप हो गया तो मानव जाति मिट जायेगी!

तभी आगे बढ़कर दीन व हिलसड़ ने महादेव को प्रणाम किया—

हे देव... हम भी विपदा के मारे हैं!

हमारा भी संकट दूर करें भगवन!

महादेव ने शांति से उनकी बात सुनी फिर—

ओह तो तुम्हारी दुखभरी गाथा भी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश जैसी ही है!

हां भगवन... अब आपको हमने सारी बात बता दी है। अब आप ही कोई उचित हल निकालिए!

मेरी नजरों में पृथ्वी के मनुष्य व राक्षस एक समान हैं... और रही तुम्हारी विपदा की बात तो उसका हल तुम स्वयं भी कर सकते हो!

सबके मुंह से एक ही स्वर गूंजा—

वो कैसे भगवन?

तुम पांचों के तत्वों से ही मानव का निर्माण हुआ है... अतः तुम पांचों शक्तियां अपनी-अपनी शक्ति का एक-एक अंश मिलाकर स्वयं ही उन असुर शक्तियों के सामने एक प्रचंड महाशक्ति खड़ी कर सकते हो!

पांचों, महादेव की बातों का अर्थ समझ गए —

पृथ्वी ने अपने मिट्टी के अंश से बनाया धड़ ...

इसका सिर हमेशा गौरव से ऊंचा उठा रहेगा।

और आकाशदेव ने सिर —

अग्निदेवता ने दिये उसे पांव —

आग्नि देव के अंश से बनी उसकी भुजाएं —

और वायु देवता ने फूंकी उस मिट्टी के पुतले में सांसें —

उन पांचों शक्तियों के अंश से जो महाप्रचंड शक्ति का निर्माण हुआ वह था प्रचण्ड!

महाशक्ति प्रचंडा ने सभी को प्रणाम किया—

प्रणाम माता पृथ्वी, प्रणाम... सभी देवो।

महासागरों के जल पर भी तुम उसी प्रकार दौड़ सकते हो जैसे मैदान में!

आग का भीषण तूफान भी तुम्हें जला नहीं सकता और तुम्हारे एक इशारे पर शांत हो जायेगा!

प्रचंडा... पृथ्वी का एक-एक कण तुम्हारे इशारे पर काम करेगा!

आकाश के बादल, बिजली तुम्हारे इशारे पर चलेंगे!

मैं तुम्हें पहले से कहीं भी आने-जाने की योग्यता प्रदान करता हूं!

महादेव... तो फिर प्रचंडा को सर्वप्रथम हमारे ऊपर होने वाले अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए कहिए!

तभी बोल उठे होंठ व खिलखिलाहट—

प्रचंडा तुम्हें ही नहीं, बल्कि पृथ्वी के समस्त असुरों से मुक्ति दिलाएगा!

फिर क्या हुआ जानने के लिए पढ़ें—
प्रचण्डा सीरीज का आगामी कामिक्स
चंद्रोदय